स्थानकवासी समाज में आचार्य जय जन्म त्रिशताब्दी वर्ष में
एक क्रान्तिकारी कदम

समण व समणी दीक्षा

(एक सिंहावलोकन)

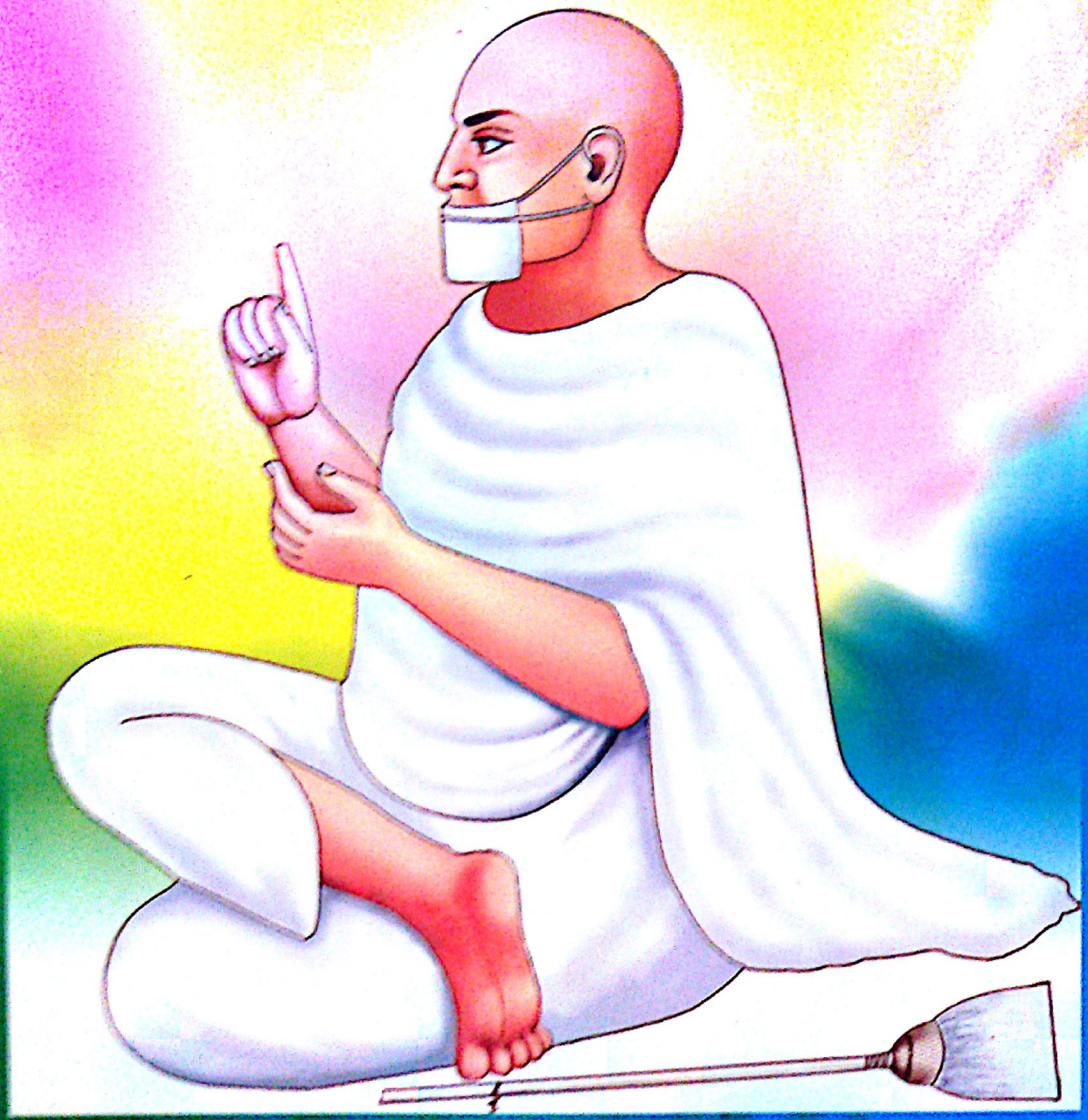

एकभवावतारी युगप्रधान आचार्य सम्राट् श्री जयमलजी म.सा.

... प्रकाशक ...

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउन्डेशन, चेन्नई

Scanned by CamScanner

आचार्य जय-जीवन प्रकाश

- एक प्रवचन श्रवण मात्र से वैराग्य उत्पन्न होना। ३ घण्टे (१ प्रहर) में खडे-खडे प्रतिक्रमण कंठस्थ करना।

- १६ वर्ष तक एकान्तर तप, १६ वर्ष बेले-बेले तप, २० मासक्षमण तप, ९० दिन अभिग्रह युक्त तपस्या, एक बार चौमासी तप, एक बार छह मासी तप, २ वर्ष तक तेले - तेले पारणा, ३ वर्ष ५ के पारणे ५ की तपस्या आदि अनेक तपस्या करना।

- ५० वर्ष तक आड़ा आसन नहीं करना। वि.सं. १८०४ से वि.सं. १८५३ तक।

- ८ दिन तक निराहार रहते हुए बीकानेर में ५०० यतियों को चर्चा में परास्त कर सदा के लिए जैन संतों हेतु सर्वप्रथम क्षेत्र खोला।

- पीपाड़, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, सांचौर, खींचन, फलोदी, सिरोही, जालोर आदि अनेकानेक क्षेत्रों में यतियों को चर्चा में परास्त कर क्षेत्र खोले।

- ७०० भव्यात्माओं को दीक्षा दी। ५१ शिष्य, २०० प्रशिष्य, ४९९ साध्वी समुदाय।

Scanned by CamScanner

॥ नमोत्थुणं गणहर गोयमसामिस्स ॥

स्थानकवासी समाज में आचार्य जय जन्म त्रिशताब्दी वर्ष में
डॉ. श्री पदमचंद्रजी म.सा. द्वारा प्रारंभ
एक क्रान्तिकारी-कदम

समण व समणी दीक्षा

(एक सिंहावलोकन)

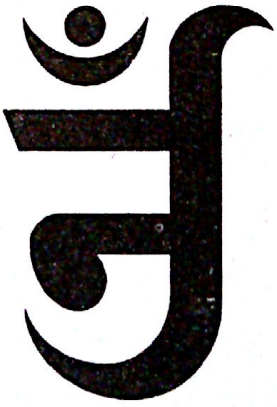

* प्रकाशक *
श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउन्डेशन
चेन्नई.

Scanned by CamScanner

- **समण व समणी दीक्षा :**
  (एक सिंहावलोकन)

- **वरद-हस्त :**
  जय गच्छाधिपति आचार्य प्रवर **श्री शुभचन्द्रजी म.सा.**

- **प्रेरणा :**
  संयम शिरोमणि आगम विवेचक पंडित रत्न
  उपाध्याय प्रवर **श्री पार्श्वचंद्रजी म.सा.**

- **प्रस्तुति :**
  डॉ. श्री पदमचंद्रजी म.सा. (एम.ए., पी.एच.डी)

- **प्रतियाँ :**
  1000

- **प्रथम संस्करण :**
  वि. सं. 2064, कार्तिक शुक्ला 11

- **प्रकाशक व प्राप्ति स्थल :**
  श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन
  गुरु जयमल लाल-ज्ञान मरलेचा स्वाध्याय भवन
  जय वाटिका, मरलेचा गार्डन
  नं. 48, गोपाल मेनन स्ट्रीट, हन्टर्स रोड़, वेपेरी, चेन्नई - 600 007.

- **मूल्य :**
  रु. 50/- (पच्चास रुपए मात्र)

- **सर्वाधिकार सुरक्षित :**
  श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई - 600 007.

- **मुद्रक :**
  नवकार प्रिंटर्स (निलेश जैन), चेन्नई.
  मोबाईल : 98400 98686, 93808 98686

Scanned by CamScanner

* अनुक्रमणिका *

क्या ?	कहाँ ?
1. जय पार्श्व-पद्मोदय अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्थान (परिचय)	1
2. जय जैन श्रावक संघ (प्रादुर्भाव)	4
3. युग प्रधान आचार्य सम्राट् श्री जयमलजी म.सा.	5
4. आचार्य सम्राट की भिक्षु-भिक्षुणी परम्परा (इतिहास के झरोखे से)	6
5. समण/समणी दीक्षा	7
6. समण/समणी दीक्षा क्या है ?	8
7. समण/समणी दीक्षा (आचार संहिता)	9
8. समण/समणी दीक्षा (वेशभूषा, नामकरण, केशलुन्चन, वंदनविधि)	10
9. समण/समणी वर्ग आत्मानुशासन एवं व्यवस्था	12
10. समण/समणी दीक्षा : (एक परिचय व सर्वप्रथम समणी दीक्षा)	15
11. समण/समणी साधना (ज्ञान, ध्यान, क्रिया)	17
12. समण / समणी : यात्रा	23
13. जय संघीय संस्थाएँ	25

Scanned by CamScanner

जय पार्श्व-पद्मोदय मुमुक्षु अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्थान

(JAI PARSHWA-PADMODAYA MUMUKSHU INTERNATIONAL RESEARCH INSTITUTE)

* स्थापना *

एकभवावतारी आचार्य सम्राट् पूज्य श्री जयमलजी म.सा के जन्म त्रिशताब्दी-वर्ष के उपलक्ष में पूज्य गुरुदेव संयम-शिरोमणि, आगम-विवेचक पंडित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री पार्श्वचंद्रजी म.सा. व प्रवचन - प्रभावक, स्वाध्याय-ध्यान, बारह व्रतों के प्रबल प्रेरक डॉ. श्री पदमचंद्रजी म.सा. के प्रवचनामृतों से नवम्बर 2007 में

जय पार्श्व-पद्मोदय मुमुक्षु अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्थान

(JAI PARSHWA-PADMODAYA MUMUKSHU INTERNATIONAL RESEARCH INSTITUTE)

की स्थापना की गई।

* मूल उद्देश्य *

इस शोध संस्थान का मूल उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व में अहिंसा, करुणा, दया, सद्भाव, नैतिकता के संस्कारों का निर्माण व विकास एवं जन-जन में इन संस्कारों की जागृति के लिए क्रियात्मक एवं सैद्धांतिक शोध करना है।

* मुख्य लक्ष्य *

1. देश-विदेश में अहिंसा प्रचार एवं भगवान महावीर के सार्वभौमिक सिद्धांतों को जन-जन में प्रसारित करने के लिए समण व समणियों को प्रशिक्षित करना व इन्हें इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए समय-समय पर देश व विदेश में भेजने की व्यवस्था करना।

2. जिनशासन व जैन सिद्धांतों के प्रचार - प्रसार के उद्धेश्य से समण / समणी वर्ग को प्रशिक्षित करने हेतु भारत के विभिन्न अंचलों में प्रशिक्षण केन्द्र खोलना।

3. उक्त प्रशिक्षण केन्द्रों में समण व समणियों तथा मुमुक्षुओं व आराधकों के प्रशिक्षण की व उनके आवास-प्रवास, भोजन, औषधि आदि की नि:शुल्क व्यवस्था करना।

Scanned by CamScanner

4. समणों तथा समणियों को अहिंसा, शाकाहार, सद्भाव के प्रचार-प्रसार के लिए विदेशों में भेजना तथा वहाँ उनके आवास, भ्रमण (यात्रा) आदि की आवश्यक सुविधायें उपलब्ध करवाना।

5. अहिंसा, शाकाहार, पर्यावरण – सुरक्षा जैसे विषयों पर अनुसंधान (शोध) करने के लिए रिसर्च सेन्टरों की स्थापना करना तथा रिसर्च – प्रशिक्षुओं के अध्ययन, आवास आदि की सुविधायें उपलब्ध करवाना।

6. अहिंसा, शाकाहार, समाज-सुधार, राष्ट्रीय-जागृति के लिए साहित्य सृजन करना व करवाना। उपयोगी साहित्य के प्रकाशन व वितरण की व्यवस्था करना।

7. अहिंसा व पर्यावरण-सुरक्षा के लिए सम्पूर्ण भारत में स्थान-स्थान पर केन्द्र खोलना।

8. जन-जन को अहिंसक बनाने हेतु अहिंसा विश्वविद्यालय की स्थापना करना।

* इस संस्थान के फाउण्डर हेरिडिटी ट्रस्टी *

(संस्थापक वंश – परम्परागत न्यासी)

1. श्री सुरेशकुमार गेलड़ा
2. श्री अशोककुमार कातरेला
3. श्री ए. एन. प्रकाशचंद्र बोहरा
4. श्री पारसमल डागा
5. श्री ललितकुमार गुंदेचा
6. जे. रवीन्द्रकुमार कोठारी

* इस संस्थान के वंश - परम्परागत ट्रस्टी *

1. श्री अमरचन्द बोकड़िया

Scanned by CamScanner

✻ आचार्य परम्परा ✻

1. आ. सम्राट् श्री जयमलजी म.सा.
2. आ. प्र. श्री रायचंदजी म.सा.
3. आ. प्र. श्री आशकरणजी म.सा.
4. आ. प्र. श्री सबलदासजी म.सा.
5. आ. प्र. श्री हीराचंदजी म.सा.
6. आ. प्र. श्री कस्तूरचंदजी म.सा.
7. आ. प्र. श्री भीकमचंदजी म.सा.
8. आ. प्र. श्री कानमलजी म.सा.
9. आ. प्र. श्री जीतमलजी म.सा.
10. आ. प्र. श्री लालचंदजी म.सा.
11. आ. प्र. श्री शुभचंद्रजी म.सा.

✻ स्वामी परम्परा ✻

1. स्वामी प्र. श्री कुशालचंदजी म.सा.
2. स्वामी प्र. श्री भगवानदासजी म.सा.
3. स्वामी प्र. श्री हरकचंदजी म.सा.
4. स्वामी प्र. श्री सूरजमलजी म.सा.
5. स्वामी प्र. श्री दयाचंदजी म.सा.
6. स्वामी प्र. श्री राजमलजी म.सा.
7. स्वामी प्र. श्री नथमलजी म.सा.
8. स्वामी प्र. श्री चौथमलजी म.सा.
9. स्वामी प्र. श्री वक्तावरमलजी म.सा.
10. स्वामी प्र. श्री रावतमलजी म.सा.
11. स्वामी प्र. श्री चाँदमलजी म.सा.

✻ गौरवमयी जय परम्परा ✻

Scanned by CamScanner

* श्री जयमल जैन श्रावक संघ का स्वर्णिम इतिहास *

• अवतरणिका (श्री जयमल जैन श्रावक संघ का प्रादुर्भाव)

जीवात्मा व धर्म का अनादि काल से सम्बंध रहा है। कभी समय की धारा में जीव का धर्म से किन्हीं अंशों में संबंध विच्छेद हो जाता है तो कभी क्षेत्र-विशेष में उत्पन्न होकर वह धर्म-युक्त रह जाता है। अढ़ाई द्वीप के आर्य क्षेत्रों में समय-समय पर तीर्थंकर भगवंत धर्म की अवरूद्ध धारा को पुन: प्रवाहित कर श्रावक - श्राविका व साधु - साध्वी रूप धर्म तीर्थ की स्थापना करते हैं। उन तीर्थंकर भगवंतों के शासन काल में सर्वप्रथम तीर्थंकरों के गणधर तत्पश्चात् आचार्य, उपाध्याय व साधु-साध्वी उस धारा को सूखने से बचाते हैं और अपने प्रभावी धर्म-प्रचार से उसे पूरित करते हैं।

ऐसे ही आचार्यों की श्रृंखला में एक महान आचार्यश्री की आत्मा ने आज से तीन सौ वर्ष पूर्व इस धरा धाम पर जिनशासन की महती प्रभावना हेतु अवतरण लिया था। बावीस वर्ष की पूर्ण यौवनावस्था में अखंड ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर, कर्म जंजीरों से मुक्त होने के लक्ष्य से वि.सं. 1788 की मिगसर वद द्वितीया के दिन मेड़ताशहर में श्री जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। क्षमाधर आचार्य श्री भूधरजी महाराज के शिष्य बन उत्कृष्ट निरतिचार संयम का पालन के साथ, उग्र तपाराधना करते हुए आगम के गूढ़ ज्ञाता बने, उस समय में जिन धर्म में शिथिलाचारी बने हुए यतियों को चर्चाओं में परास्त किया और इन यतियों के आतंक के कारण अनेक ऐसे क्षेत्र जो शुद्ध संयम पालक साधु-साध्वियों के प्रवेश के लिए भी निषिद्ध से बन गये थे, उन सभी को आगमोक्त समाचारी पालक साधु-साध्वियों के विचरण हेतु खोल दिया और चर्चा चक्रवर्ती कहलाए। आचार्य सम्राट् श्री जयमलजी म.सा. के ज्ञान व तप तेज से प्रभावित चतुर्विध संघ ने उन्हें वि.सं. 1805 की अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ला ३) को जोधपुर नगर के सिंहपोल नामक धर्मस्थल में आचार्य के पद पर प्रतिष्ठापित किया। आपको आचार्य पद प्रदान करने के दिन से ही श्री अ. भा. श्वेताम्बर स्थानकवासी जयमल जैन श्रावक संघ का प्रादुर्भाव हुआ।

Scanned by CamScanner

* युगप्रधान आचार्य सम्राट् श्री जयमलजी म.सा.

एकभवावतारी, चर्चा चक्रवर्ती, भीष्मप्रतिज्ञाधारी, अखंड ब्रह्मचारी, घोर तपस्वी, युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य श्री जयमलजी म.सा. ने आत्मकल्याण की साधना करते हुए जिनशासन की प्रभावना के लक्ष्य से सात सौ (700) भव्यात्माओं को अपने उत्कृष्ट वैराग्यमय जीवन और मर्म स्पर्शी विरक्ति-भरे उद्‌बोधनों से प्रबुद्ध बनाकर श्री जैन भागवती दीक्षा मंत्र प्रदान किया और तत्कालीन जैन-जगत में आप दीक्षादान दानेश्वर के नाम से विख्यात बने।

आचार्य पद को गौरवान्वित करते हुए वि. सं. 1805 से 1851 तक इस दिव्यात्मा ने जिनशासन की उत्कृष्ट प्रभावना की। तत्पश्चात् जिस महनीय उद्‌देश्य से इस महासाधक ने संयम के पथ को स्वीकार किया था, केवल-मात्र इसी एक लक्ष्य, इसी एक उद्‌देश्य में निरत बनने के विचार से अपने अंतिम समय को ज्ञानबल से निकट समझ कर पूर्ण रूप से अध्यात्म व आत्म चिंतन-मनन में रत होने का निर्णय कर अपना आचार्य पद वोसरा कर अपनी विद्यमानता में वि.सं. 1851 में अपने उत्तराधिकारी की घोषणा कर श्री रायचन्दजी म.सा. को आचार्य पद प्रदान किया और आचार्यों के आचार्य कहलाए तथा गच्छाधिपति पूज्य श्री जयमलजी म.सा. के नाम से ख्याति प्राप्त की।

आपश्री का चिन्तन सर्वथा मौलिक व अलौकिक था। आपने अपने उसी चिन्तन को शब्दों में गूंथ कर प्रभावी प्रवचनों व सरल-सरस काव्य सृजनाओं के माध्यम से जन - जन के अंतर में उतारा, जिसके कारण तत्कालीन रुढ़ि ग्रस्त समाज अनेक कुरुढ़ियों, कुरीतिओं व अंध विश्वासों से मुक्त बन सका। आचार्य सम्राट् की ऐसी 250 से अधिक सार्वकालिक व सार्वभौमिक काव्यसृजनाओं ने जिस सामाजिक-क्रांति का शंखनाद फूंका उसके कारण ही आप महान समाज सुधारक व संत कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। जड़-पूजा व शिथिलाचार मिटाकर वे युग प्रधान कहलाए।

Scanned by CamScanner

• आचार्य सम्राट की भिक्षु-भिक्षुणी दीक्षा परम्परा (इतिहास के झरोखे से)

जैन इतिहास में समण-समणी की दीक्षा परम्परा को नवीन नहीं कहा जा सकता । आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व एकभवावतारी, भीष्म प्रतिज्ञाधारी, अखंड ब्रह्मचारी, चर्चाचक्रवर्ती, युगप्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य श्री जयमलजी म.सा. के समय भिक्षु-भिक्षुणी दीक्षा के रूप में इस परम्परा का प्रादुर्भाव हो गया था। इस युगप्रधान आचार्य सम्राट् ने संयम मार्ग में प्रवेश करने वाले साधकों को तपाकर कुन्दन बनाने के दृष्टिकोण से संयम -पथ पर अग्रसर बनने के अभिलाषी जनों को वय-परिपक्व, ज्ञान-परिपक्व व क्रिया-परिपक्व होने पर ही मुनि-दीक्षा देकर संयम प्रवेश का निर्णय लिया और इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए इस शासन-काल में सर्वप्रथम श्रावक-श्राविका एवं साधु-साध्वी के बीच की कड़ी के रूप में भिक्षु व भिक्षाचरी दीक्षा की क्रांतिकारी परम्परा का प्रादुर्भाव किया। आचार्य सम्राट् का लक्ष्य था कि जो संयम-पथ पर चलने के इच्छुक सवा आठ वर्ष की आयु से कम हैं अथवा ज्ञान-ध्यान में अभी जिन में परिपक्वता नहीं आ पाई है उन्हें साधु-साध्वी बनने से पूर्व भिक्षु या भिक्षाचरी के रूप में दीक्षा देकर साधु-साध्वी बनने के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

क्रियात्मक रूप से आचार्य सम्राट् ने यह कदम उठाकर तत्कालीन जैन-समाज को एक बार तो चकित किया पर धीरे-धीरे समाज ने इसे समादृत किया । आचार्य सम्राट् के समय भिक्षु व भिक्षुणी दीक्षा - मंत्र अंगीकार कर साधु-वेष में गुरु या गुरुवर्या के सानिध्य में रहकर ज्ञान-ध्यान सीखते, गौचरी लाकर आहार ग्रहण करते तथा लगभग साधुचर्या की तरह जीवन व्यतीत कर श्रमण भूत प्रतिमा को जीवन - प्रत्यक्ष करते थे। परिपक्वता आने पर वे भिक्षु-भिक्षुणी पूर्ण रूप से जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर लेते थे। पके-पकाये व तपे तपाये ऐसे साधु-साध्वी का संयम पालन उत्कृष्ट कोटि का होता था। समाज में उनका महत् प्रभाव था और जिनशासन की उनके द्वारा महती प्रभावना होती थी।

Scanned by CamScanner

• समण - समणी दीक्षा

(प्रवचन प्रभावक डॉ. श्री पदमचंद्रजी म.सा. का स्थानकवासी समाज में सर्वथा नवीन क्रांतिकारी कदम)

आचार्य सम्राट् जय जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष में जयगच्छीय ग्यारहवें पट्टधर सरलमना, प्रशान्त चेता आचार्य प्रवर श्री शुभचंद्रजी म.सा. एवं संयम शिरोमणि, पंडित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री पार्श्वचंद्रजी म.सा. की स्वीकृति एवं आज्ञा से युवा मनीषी डॉ. श्री पदमचंद्रजी म.सा. ने दो शताब्दी पूर्व की उस भिक्षु-भिक्षुणी दीक्षा परम्परा को नव रूप-स्वरूप में स्व-पर कल्याणार्थ पुन: प्रारंभ करने का लक्ष्य बना कर श्री अ. भा. श्वे. स्था. जयमल जैन श्रावक-संघ के समक्ष एक विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। संघ के सभी सदस्यों ने सर्व सम्मति से इस प्रायोगिक अवधान को तुरंत गति प्रदान करने की आवश्यकता अनुभव कर डॉ. मुनिश्री से इस सरित्-धारा को सुव्यस्थित सलिल प्रवाह देकर प्रवाहमयी बनाने का निवेदन किया।

वैसे यह मानना भी अनुचित नहीं होगा कि इस समय पर्युषण काल में अपनी अमूल्य सेवा देने वाले स्वाध्यायी भाई-बहनों के स्वाध्याय करने-कराने, स्वाध्यायी बनाने की यह परम्परा भी श्रावक-श्राविका एवं साधु-साध्वी वृंद के मध्य की ही एक कड़ी है पर भिक्षु-भिक्षुणी दीक्षा परम्परा से वह सर्वथा भिन्न है एवं केवल पर्युषण-काल में ही फलित होती है।

अत: बारह ही मास निरन्तर धर्म-सरिता के प्रवाह को अधिक से अधिक धाराओं में गतिमान बनाने के लक्ष्य से श्रावक-श्राविका वृंद, स्वाध्यायी भाई-बहनों व साधु-साध्वी वृंद के मध्य सेतु के रूप में एक नई कड़ी समण-समणी वर्ग को जोड़ने का स्थानकवासी समाज में क्रांतिकारी कदम डॉ. श्री पदमचंद्रजी म.सा. ने उठाया है, जो जय-जन्म त्रिशताब्दी वर्ष की जैन समाज को अद्भुत, अद्वितीय देन तो है ही इस त्रिशताब्दी वर्ष की अनमोल उपलब्धि भी है।

Scanned by CamScanner

• समण-समणी दीक्षा क्या है ?

1. समण व समणी दीक्षा किसी नवीन परम्परा का प्रचलन नहीं है। यह एकभवावतारी, अखंड, ब्रह्मचारी, भीष्म प्रतिज्ञाधारी, युग पुरुष आचार्य सम्राट् पूज्य श्री जयमलजी म.सा. द्वारा आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व प्रारंभ की गई भिक्षु व भिक्षुणी दीक्षा का ही एक सर्वथा नूतन रूप है।

2. समण - समणी दीक्षा का प्रायोगिक रूप-स्वरूप अपने आप में एक क्रांतिकारी कदम है, जिसमें न उम्र बाधक है और न ज्ञान - ध्यान अवरोधक।

3. समण-समणी दीक्षा एक प्रशिक्षण है, साधना का प्रशिक्षण। समण-समणी इस प्रक्षिण काल में प्रशिक्षित होकर साधु या साध्वी बनने पर अधिक परिष्कृत रूप से संयम व उत्कृष्ट साधु समाचारी का पालन करने वाले बनेंगे।

4. समण-समणी दीक्षा एक प्रकार का सागार-संयम काल व्यतीत करने का संकल्प है, जिसके द्वारा साधक या साधिका पूर्ण रूप से निरतिचार संयम में प्रवेश के लिए अपने को तत्पर बनाता हुआ उत्तरोत्तर मोक्षारोहण करता है। यह दीक्षा साधकों के लिए मोक्ष-सिद्धि का एक सशक्त व अभिनव अनुष्ठान है।

5. समण-समणी दीक्षा समस्त संसार के जन-जन में अहिंसा धर्म का प्रचार-प्रसार कर जिनशासन की उत्कृष्ट प्रभावना के लक्ष्य को लेकर प्रारंभ की गई है। इससे सहज ही तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन हो सकता है।

6. समण-समणी दीक्षा अहिंसा, सत्य, अचौर्य ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह का पालन करते हुए पूर्ण रूप से पंच महाव्रतों में प्रवेश की सोपान है।

7. समण-समणी दीक्षा अट्ठारह पाप स्थानों में से प्रथम प्राणातिपात नामक पापस्थान के लिए आंशिक रूप से त्याग की एवं मृषावाद आदि शेष सत्रह पापस्थानों के पूर्णरूप से त्याग करने की आजीवन प्रतिज्ञा है।

Scanned by CamScanner

• समण समणी दीक्षा - आचार संहिता

1. अहिंसा महाव्रत के अन्तर्गत संकल्पजा हिंसा का पूर्ण रुप से त्याग एवं आरंभजा हिंसा में भावपूर्वक हिंसा का त्याग । विशेष_जिनशासन की प्रभावना, प्रचार व प्रसार की दृष्टि से माइक (ध्वनि-वर्धक यंत्र) तथा वाहन प्रयोग एवं पांचवी समिति आगार के अतिरिक्त सर्व प्रकार की हिंसा का त्याग।

2. सत्य महाव्रत : मृषावाद का सर्वथा त्याग।

3. अचौर्य महाव्रत : चौर्यकर्म का सर्वथा त्याग।

4. ब्रह्मचर्य महाव्रत : कुशील सेवन का सर्वथा त्याग।

विशेष : • विपरीत लिंगी का प्रत्यक्ष संघट्टा भी टालने का संकल्प

• वासना उत्तेजित करने वाली, रस लोलुपता बढ़ाने वाली, आपसी क्लेश वृद्धि हो, राग-द्वेष बढ़े - ऐसी विकथा नहीं करना।

5. अपरिग्रह महाव्रत : परिग्रह रखने का सर्वथा त्याग।

• विशेष - सर्वज्ञ तीर्थंकर भगवंत महावीर के आत्मकल्याणी वचन - 'मुच्छा परिग्गहोवुत्तो' की उक्ति को जीवन-व्यवहार में स्थान देकर संयम रक्षा व जिनवाणी प्रचार-प्रसार हेतु प्रयोग व उपयोग में आने वाली आवश्यक वस्तुओं को रखना काम में लेना पर उनमें आसक्ति, ममत्व, राग भाव नहीं रखना।

(चल व अचल सम्पत्ति, धन, रुपया-पैसा, स्वर्ण-रजत आदि रखना नहीं, किसी अन्य के पास रखवाना नहीं)

• 6. रात्रि में चारों प्रकार के आहार असणं, पाणं, खाइमं, साइमं का पूर्ण त्याग रखना तथा रात्रि में रंच मात्र भी असन, पान आदि नहीं रखना।

7. मन के योगों का गोपन करना।

8. वचन-योगों का गोपन करना।

9. काय योगों का गोपन करना।

• विशेष - पंचेन्द्रिय - निग्रह द्वारा त्रियोगों का गोपन करते हुए भाव संयम में रमण करना और इसके लिए बार-बार कायोत्सर्ग लीन बनना।

Scanned by CamScanner

• वेश भूषा •

व्यक्ति की वेष-भूषा उसके व्यक्तित्व की परिचायक होती है। एक विशेष वेश धारण करने पर अन्य लोग समझ जाते हैं कि यह अमुक व्यक्तित्व वाला है। यथा-श्वेत वस्त्र एक निश्चित प्रकार से धारण करने पर जैन साधु-साध्वी की प्रतीति जन-जन को हो जाती है।

सर्वज्ञ तीर्थंकर भगवंतों ने अपने विशिष्ट ज्ञान से जानकर धर्म के बाह्य साधनों (वेष, चिन्ह, उपकरण आदि) को धारण करने की अनुमति दी है। निश्चय की अपेक्षा से तो ज्ञान, दर्शन व चारित्र ही मोक्ष के साधन हैं, लेकिन नाना प्रकार के वस्त्रों, उपकरणों आदि का विधान जन - साधारण की प्रतीति के लिए होता है। स्वयं साधक को भी अपने आपको यह प्रतीति होनी चाहिए कि -''मैं साधु हूं''। इस तरह की प्रतीति का लाभ यह है कि साधक अपने व्रतों में दोष नहीं लगाएगा, लग रहा हो कहीं दोष तो चिंतन करेगा, लग जाएगा दोष तो आलोचना पूर्वक प्रायश्चित कर शुद्धि करण करेगा।

साधु-साध्वी की तरह ही समण/समणी वर्ग के लिए भी लिंग (वेष-उपकरण आदि) का निश्चित प्रयोजन है। प्रभु महावीर के शासन काल में अचेलक धर्म के साधु-साध्वियों के लिए श्वेत वस्त्र, अल्पमूल्य वाले वस्त्र एवं परिमित वस्त्र धारण करने-रखने का विधान है। समण / समणी भी दीक्षा के पश्चात् अपनी पहचान-प्रतीति के हेतु श्वेत-वस्त्र ही धारण करेंगे। वे भिक्षार्थ काष्ट-पात्र रखेंगे। इन पात्रों के लिए श्वेत वस्त्र की झोली रखेंगे। जीव दया का परिचायक रजोहरण भी रखने का उनके लिए विधान किया गया है। पहने हुए कपड़ों के अतिरिक्त वस्त्रों व स्वाध्याय निमित्त पुस्तकों के लिए श्वेत वस्त्र की थैली या थैला रखेंगे। मुख पर आगम प्रमाणानुसार मुख वस्त्रिका बांधेंगे।

समण-समणी साधु-साध्वी बनने का भाव रखते हैं अत: द्रव्य : निक्षेप की अपेक्षा से इन्हें साधु-साध्वी भी कहा जा सकता है। इसी तथ्य को लक्ष्य में रखकर समण/समणी वर्ग के लिए श्वेत वस्त्रों का ही विधान

Scanned by CamScanner

किया गया तथा जिस समय समण/समणी आवश्यकतावश वाहन प्रयोग करते हों, उस समय भाव निक्षेप की समाचारी में उलझन, ऊहापोह, असमंजस की स्थिति न बन पाये इस लक्ष्य से श्वेत कवच पहनने व मुख वस्त्रिका हाथ में लेने का विधान रखा गया। ऐसे समय समण/समणी वेश व रजोहरण का गोपन करेंगे। धर्म स्थानक में या पद – विहार – चर्या में रजोहरण के साथ दंडासन का भी विधान किया गया, जिससे उपयोग पूर्वक गमनागमन, भूमि प्रतिलेखन व अन्य जीव रक्षा के कार्य सम्पन्न हो सकें।

● नामकरण : समण/समणी को दीक्षा–मंत्र प्रदाता गुरुदेव जो नाम देंगे, दीक्षा पश्चात् समण/समणी उसी नाम से संबोधित किए जाएंगे। प्रत्येक समणी के नाम के साथ ''निधि'' शब्द प्रयोजित किया जायेगा।

● केशलुञ्चन : समण / समणी प्रतिवर्ष आवश्यक रूप से दो बार केशलुन्चन करेंगे। वे केशलुन्चन के साथ ही केशापनयन भी कर सकेंगे।

● वन्दनविधि : भारतीय संस्कृति में त्याग का स्थान सर्वोपरि है। यहाँ बड़े से बडा राजा, सम्राट, मंत्री प्रधानमंत्री भी त्यागी के चरणों में नतमस्तक होता है। नर या नारी जिस क्षण घर–संसार की मोह–माया को त्याग देता है, नाते–रिश्तों के बंधनों को तोड़ देता है और मुमुक्षु बन कर संयम के पथ पर अग्रसर बन जाता है। तभी से वह विश्व का वन्दनीय पूजनीय, नमनीय बन जाता है। नमन, वंदन से व्यक्ति अपने भीतर के विनयगुण को दर्शाता है। इसी विनय के कारण ज्ञानार्जन की योग्यता आती है। नीति में कहा है– ''विनयात् आप्नोति पात्रताम्''।

समण/समणी वर्ग भी गृह त्यागी है, विरक्त – वैरागी है, संयमी है। वह वर्ग साधु–साध्वी से एक सोपान नीचे और श्रावक –श्राविका व स्वाध्यायी वर्ग से एक सोपान ऊपर है। इस वर्ग को नमन करना श्रावक–श्राविकाओं, स्वाध्यायियों व साधारण जन का कर्तव्य है। समण–समणी को वन्दन, नमन के लिए पंचांग नमाकर करबद्ध हो 'मत्थएण वंदामि' शब्द कहने का विधान किया गया है। प्रत्युत्तर में समण–समणी के लिए दया पालो' शब्द कहने का प्रावधान होगा। परस्पर समणी वर्ग में वंदन व्यवहार के अन्तर्गत रत्नाधिक के अनुसार तिक्खुतो के पाठ से तीन बार वन्दन करने

Scanned by CamScanner

का विधान रखा गया है। यही नियम समण वर्ग के लिए भी रहेगा।

• समण/समणी आत्मानुशासन एवं व्यवस्था •

'अप्पा सो परमप्पा' अर्थात् आत्मा ही परमात्मा है। आत्मा को उस परमात्म स्वरूप तक पहुँचाने के लिए ही प्रत्येक साधक आध्यात्मिक साधना में रत होकर आत्मरमण की स्थिति तक पहुँचता है। साधना के लिए सर्वोत्तम पथ तो यही है कि साधक का स्वयं ही अपने पर अनुशासन हो और स्व-प्रेरणा से अपनी मर्यादा में रहे, विधि-विधानों का पालन करें।

स्वानुशासन में शिथिलता की संभावना को लक्ष्य में रखकर मर्यादित -स्वतंत्र जीवन से समण/समणी स्वछंदता की परिधि का स्पर्श न कर पाएं एतदर्थ इन पर आध्यात्मिक अनुशासन गच्छ के तत्कालीन आचार्य प्रवर व उपाध्याय प्रवर का रहेगा। साथ ही आचार्य श्री एवं उपाध्याय प्रवर की आज्ञा से अन्य संत भी समण-समणी वर्ग की आध्यात्मिक-साधना के क्रिया कलापों को अनुशासित कर सकेंगे एवं उनकी सारणा, वारणा, धारणा का पूरा लक्ष्य रखेंगे।

• वर्तमान में समण/समणी वर्ग पर आचार्य प्रवर श्री शुभचंद्रजी म.सा. व उपाध्याय प्रवर श्री पार्श्वचंद्रजी म.सा. की आज्ञा से प्रवचन प्रभावक डॉ. श्री पदमचंद्रजी म.सा. का आध्यात्मिक-अनुशासन रहेगा।

• समण/समणी वर्ग की व्यवस्था के लिए सभी समणों के ऊपर एक समण-प्रमुख तथा सभी समणियों पर एक समणी-प्रमुखा को रखा जायेगा। ये दोनों गुरुदेव श्री के आज्ञानुसार अपने-अपने वर्ग की व्यवस्था करेंगे।

• समण-प्रमुख/समणी-प्रमुखा धर्म प्रचार-प्रसार हेतु कम से कम दो समण या दो समणी को साथ भेजेंगे। जहाँ अधिक की आवश्यकता हो वहां दो समण के स्थान पर तीन, चार समण तक व दो समणी के स्थान पर तीन, चार समणियों के ग्रुप को भेजेंगे।

• सम्पूर्ण समण समूह से एक या एकाधिक वर्ग में समण और संपूर्ण समणी समूह से दो या दो से अधिक की संख्या में समणी वर्ग बनाकर

Scanned by CamScanner

जिनशासन व जैन सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लक्ष्य से देश-विदेश के निकट-सुदूरवर्ती ग्राम-नगरों में भेजे जाएंगे। प्रत्येक वर्ग के समणों व प्रत्येक वर्ग की सम्मणियों का परस्पर (समण को समण से व समणी का समणी से) परिवर्तन समय-समय पर आवश्यक रूप से करने का विधान रखा गया है।

● किसी अकेली समणी का अपने स्थान से बाहर जाना (विहार, विचरण, गौचरी आदि के निमित्त) वर्जित रखा गया है।

● समण-प्रमुख/समणी-प्रमुखा जिन दो समण/ दो या दो से अधिक समणियों का वर्ग बनाकर धर्म प्रचार-प्रसार के लिए भेजें, उनमें से एक को निर्देशक/ निर्देशिका बनाकर भेजें जिससे व्यवस्था का संतुलन व अनुशासन की गंभीरता बनी रहे। समण / समणी का किसी भी एकांत स्थल पर विपरीत लिंगी से अकेले में मिलना, वार्ता करना पूर्णता : निषेधित रखा गया है।

● समण/समणी जीवन जिनशासन व आत्मसाधना के लिए पूर्णत: सामुदानिक-जीवन होगा। अपने इस सामुदायिक जीवन को व्यतीत करते हुए समण वृंद अपने वर्ग में तथा समणी वृंद अपने वर्ग में किसी को भी रागासक्ति की भावना से अपना नहीं बनाएंगे।

● समण/समणी दीक्षा के पश्चात् प्रशिक्षण प्राप्त कर योग्यता अर्जित कर लेने पर किसी भी परम्परा या गच्छ में पूर्ण रूप से मुनि दीक्षा अंगीकार करने के लिए स्वतंत्र होंगे।

● जैन भागवती दीक्षा धारण करने से पूर्व समण / समणी को साधु/साध्वी के साथ (समण को साधु के पास, समणी को साध्वी के पास) कम से कम 6 मास तक रहकर धर्माराधना, उत्कृष्ट क्रिया - साधना, समन्वय, सामंजस्य आदि का विवेक धारण करना होगा।

ऐसा सफलता पूर्वक कर लेने पर जय पार्श्व-पद्मोदय मुमुक्षु इन्टरनेशनल संस्थान को लिखित रूप से निवेदन करना होगा। संस्थान की स्वीकृति मिलने पर जैन भागवती दीक्षा उस परम्परा में अंगीकार की जा सकती है।

Scanned by CamScanner

● आचार–संहिता में किसी भी प्रकार का दोष लगने पर गुरुदेवश्री के पास आलोचना, निंदा, प्रतिक्रमण, प्रायश्चित के द्वारा उस दोष का शुद्धिकरण समण/समणी को करना होगा। आचार संहिता या अनुशासन के उल्लंघन का दोषी पाये जाने पर दोसी समण/समणी को एक–दो बार समझाने का प्रयत्न किया जायेगा। इसके पश्चात् भी किसी प्रकार का परिवर्तन (सुधार) नहीं पाया गया तो उस दोषी समण / समणी को गुरुदेवश्री की आज्ञा से वेष परिवर्तन कराकर पुन: उसके सांसारिक–परिजनों को सुपुर्द कर दिया जायेगा।

● किसी समण / समणी द्वारा यदि कोई ऐसी अनुचित प्रवृत्ति की जाये, जो जैन धर्म व जिनशासन की हीलना–निंदा का कारण बने या संघ व समाज को जिसके कारण नीचा देखना पड़े, ऐसी परिस्थिति में जय पार्श्व–पद्मोदय मुमुक्षु इन्टरनेशनल रिसर्च संस्था इस समण/समणी पर किसी भी प्रकार की कठोर कार्यवाही करने में स्वतंत्र है।

● केन्द्रीय कार्यालय पर एक मुख्य संयोजक की नियुक्ति की जायेगी। उसके अन्तर्गत प्रांतवार प्रांतीय – संयोजक कार्य करेंगे। हर प्रांतीय संयोजक के अन्तर्गत जिलावार क्षेत्रीय संयोजकों की नियुक्ति होगी। विदेशों में क्षेत्रीय संयोजकों की नियुक्ति राष्ट्रानुसार की जायेगी।

● किसी समण/समणी को आमंत्रण के लिए निवेदन क्षेत्रीय संयोजक की मार्फत प्रांतीय संयोजक व मुख्य संयोजक को किया जायेगा। मुख्य संयोजक अनुशास्ता गुरुदेव के सम्मुख निवेदन रखकर, उनकी सहमति के अनुसार स्वीकृति प्रांतीय व क्षेत्रीय संयोजक तथा निवेदन कर्ता संघ को भेजेंगे।

● समण/समणी वर्ग को स्वीकृत स्थल पर भेजने की व्यवस्था क्षेत्रीय संयोजक करेंगे। स्वीकृत स्थल पर पहुंचने के पश्चात् वहां की समस्त व्यवस्था तथा समण/समणी वर्ग को आगे के स्थल तक पहुंचाने की व्यवस्था वहां का संघ या मुमुक्षु इन्टरनेशनल संस्थान करेगा।

Scanned by CamScanner

॥ पूज्य श्री जयमल्लाय नमः ॥

• समण/समणी दीक्षा •

(परिचय)

समण / समणी दीक्षा को हम मुनिजीवन का प्रयोग - काल या प्रशिक्षण काल कह सकते हैं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह का पूर्ण रूप से यावज्जीवन पालन मुनिधर्म या अणगार धर्म है। मर्यादित रूप में इन व्रतों का पालन आगार धर्म या गृहस्थ (श्रावक-श्राविका) धर्म है। समण/समणी जीवन प्रभु महावीर द्वारा निरूपित अणगार व आगार धर्म के बीच का सेतु है। वहाँ अणगार धर्म की चर्चागत कठोरता को कुछ कोमलता प्रदान करते हुए छूट का प्रावधान है पर वह छूट जिन शासन के प्रचार-प्रसार में व्यापकता बने, इसी लक्ष्य से रखी गई है। फिर भी यह तो कहना ही पड़ेगा कि समण/समणी जीवन श्रावक/श्राविका जीवन या गृहस्थ जीवन से बहुत अधिक कठोर है, जिसमें गृहस्थ जीवन-सी स्वतंत्रता तो नहीं है पर मुनि जीवन सी कठोरता भी नहीं है।

आयु में 65 वर्ष से अधिक पुरुष वर्ग को मुनि दीक्षा लेने में असमर्थता होने पर आपवादिक स्थिति में समण दीक्षा देने का विधान रखा गया है।

समणी दीक्षा हेतु बालिका तथा महिला वर्ग के लिए न्यूनतम व अधिकतम आयु की कोई सीमा निर्धारित नहीं की गई है। इसका उद्देश्य साध्वी समाज में अधिक परिष्कृत एवं परिपक्व साध्वियों को लाना है।

समण/समणी दीक्षा अंगीकार करने के पश्चात साधक/ साधिका का जीवन साधुचर्या के समान ही साधु-समाचारी के आचार व नियमों की सी प्रतिबद्धता लिए हुए रहेगा पर उन्हें जिन शासन की व्यापक प्रभावना व जैन-दर्शन के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु अपवाद की स्थिति में कुछ नियमों से मुक्त रखा गया है। इनमें मुख्यतया वाहन व माइक के प्रयोग, फ्लश टॉयलेट का उपयोग तथा टीफीन-गोचरी ग्रहण की छूट स्वीकार की गई है।

समण - समणी दीक्षा यावज्जीवन के लिए अंगीकार करेंगे। इसमें आंशिक या सावधि (काल-मर्यादित) दीक्षा का प्रावधान इसमें नहीं रहेगा।

Scanned by CamScanner

जब समण या समणी धर्म के साधक साधना करते हुए अपने को उत्कृष्ट संयमचर्या के अनुकूल बनालेंगे और पूर्ण रूप से आत्मकल्याण की साधना के पथ पर अग्रसर बनने में सक्षमता प्राप्त कर लेंगे तब वे पूर्ण रूप से पंचमहाव्रत मुनि दीक्षा अंगीकार करने के लिए स्वतंत्र होंगे।

• सर्वप्रथम समणी दीक्षा •

समण/समणी वर्ग में समणी श्रेणी में सर्वप्रथम दीक्षित बनने की श्रीमती वसन्ताजी मेहता व सुश्री दीप्तिजी मेहता ने पहल कर इस क्रांतिकारी कदम को मूर्तरूप प्रदान किया है।

Scanned by CamScanner

समण- समणी

* साधना *

1. ज्ञान 2. ध्यान 3. क्रिया

ज्ञान साधना : ज्ञान ही विशिष्ट-ज्ञान तक पहुंचाता है और वही विशिष्ट ज्ञान व्यक्ति के जीवन को लौकिक व लोकोत्तर दोनों प्रकार की सफलता के सोपानों पर चढ़ने में सक्षम बनाता है। लौकिक की अपेक्षा समण-समणी वर्ग लोकोत्तर ज्ञान के लक्ष्य से ज्ञान साधना करते हैं पर लौकिक (स्कूली और महा - विद्यालयीय) ज्ञान भी जीवन की एक आवश्यकता माना गया है। यही कारण है कि समण-समणी के लिए आगमिक-ज्ञान के साथ लौकिक-शिक्षा व अनुभव को भी योग्यता का मानक समझा गया है।

वस्तुत : समण/समणी दीक्षा का मुख्य उद्देश्य है जैन समाज को अनुभवी, शिक्षित व ज्ञानी साधु-साध्वी प्राप्त करवाना और उन्हें उत्कृष्ट-चर्या पालक व आत्म कल्याण के पथ पर निरंतर अग्रसर रहने वाले बनाना। इस उद्देश्य में स्व एवं पर कल्याण, दोनों ही निहित हो जाते हैं।

अणगार धर्म अंगीकार करने वाले जैन साधु-साध्वी पंचमहाव्रतों का पालन करते हैं व जिनवाणी का सन्देश घर-घर में, जन-जन तक पहुँचाते हैं। उनका इस प्रकार का जिनवाणी-सन्देश वस्तुत: जिनवाणी-प्रचार नहीं है अपितु जिनशासन की प्रभावनार्थ है। वस्तुत: जैन साधु-साध्वी जिनवाणी के प्रचारक या प्रसारक नहीं होते, वे होते हैं जिन शासन प्रभावक।

अणगार के अतिरिक्त जो आगार धर्म पालक हैं वे सभी गृहस्थ हैं और वे अपने सांसारिक कार्यों व संबंधियों-रिश्तेदारों के जाल में दिन-रात इतने अलझे रहते हैं कि उन्हें स्वयं अपने लिए आत्म-चिंतन व धर्म-साधना, ध्यानाराधना का पूरा समय नहीं मिल पाता। ऐसी स्थिति में वे जैनधर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समय कैसे निकालेंगे? इनके लिए ऐसा करना स्पष्ट ही संभव नहीं लगता।

Scanned by CamScanner

वैश्विक स्तर पर बढ़ती हुई अशांति, आतंक, उग्रता, हिंसा, भ्रष्ट-आचरण नैतिकता के ह्रास और अनेक अन्य अमानवीय तत्त्वों के फैलाव ने भगवान महावीर के सिद्धांतों की आवश्यकता का अनुभव प्रबलता से करा दिया है। अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांतवाद जैसे विलक्षण सिद्धांत ही वर्तमान-युग के मानव को शांति और समृद्धि, सुख और सौहार्दता जैसे गुणों से पूरित कर सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि भगवान महावीर के ये सिद्धांत विश्व के जन-जन के मन-मानस तक पहुंचाये जायें।

जैन समाज में इस उद्देश्य से कुछ कार्य हुआ तो है पर वह पर्वत में राई जितना ही हुआ है। कुछ स्थानकवासी जैनाचार्यों ने अपनी परम्परा में श्रावक-श्राविका वर्ग एवं साधु-साध्वी वर्ग के मध्य की कड़ी के रूप में जो स्वाध्यायी भाई-बहनों का वर्ग तैयार किया है, वह वर्ग भले ही इसी उद्देश्य को लेकर किया गया है। पर वह वर्ग गृहस्थ वर्ग ही है। अत: केवल पर्युषण-महापर्व के आठ दिनों में जिन-शासन का प्रचार-प्रसार कर पाता है, शेष तीन सौ बावन दिन अपने धंधे, नौकरी, व्यापार पालन में व्यतीत करता है।

लगभग दो शताब्दी पूर्व एक भवावतारी आचार्य सम्राट् पूज्य श्री जयमलजी म.सा. ने सागारिक-दीक्षा देकर भिक्षु-भिक्षुणी वर्ग के माध्यम से एक पूर्णकालिक सेवा देने वाला, बारह ही मास जिन-शासन के प्रचार -प्रसार में रहने वाला वर्ग तैयार किया था पर वह वर्ग भी अपने ज्ञान-ध्यान को बढ़ाने व क्रिया-साधना में रत बने रहकर आत्म-विकास के पथ पर अग्रसर होने में तो सशक्त बन सका लेकिन उद्देश्य की मुख्यधारा का फैलाव नहीं हुआ, जन-जन में जिनशासन के प्रसार-प्रचार का उद्देश्य सीमित दायरे में ही रह गया। कालान्तर में भिक्षु-भिक्षुणी वर्ग बनते रहे और वे एक निश्चित अवधि पश्चात् पूर्ण रूप से मुनि दीक्षा अंगीकार करते रहे।

विश्व भर में जिनशासन के व्यापक प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से इसी भिक्षु-भिक्षुणी दीक्षा को वर्तमान-परिपेक्ष्य का ध्यान रखते हुए डॉ. श्री पदमचंद्रजी म.सा. ने स्थानक वासी समाज में समण-समणी दीक्षा के नव्य-भव्य रूप में प्रारंभ किया है। यह एक नवीन प्रयोग है। विश्वास है

Scanned by CamScanner

मुनिश्री का यह प्रयोग संघ व समाज के सहयोग से सफलताओं के सोपानों को शीघ्रता से तय करके उद्देश्य व लक्ष्य की पूर्ति कर सकेगा।

● ज्ञान-साधना के अन्तर्गत समण-वर्ग के लिए आगमिक व तात्विक अध्ययन कराके समाधि में रत रखने वाली शिक्षा देने की व्यवस्था रखी गई है।

● समण/समणी-वर्ग के लिए मुमुक्षु इन्टरनेशनल संस्था दो तरह के अध्ययन की व्यवस्था करेगी।

1. आगमिक व आध्यात्मिक शिक्षा तथा
2. व्यावहारिक शिक्षा

जिनशासन के सम्यक् व व्यापक प्रचार-प्रसार का उद्देश्य पूर्णता की तरफ तीव्रता से अग्रसर बने एतदर्थ समणियों के लिए न्यूनतम योग्यता स्नातक (Graduation) रखी गई है।

दीक्षा से पहले स्नातक-योग्यता नहीं होने की स्थिति में समणी-दीक्षा के पश्चात् उस समणी के लिए जैन दर्शन में स्नातक बनने हेतु अध्ययन, अध्यापन परीक्षा देने आदि पूर्ण व्यवस्था की जायेगी।

इसी तरह जैन दर्शन में स्नातक बनने के पश्चात् भी रुचि व योग्यता के अनुसार स्नातकोत्तर (Post - Graduation) व आगे भी उच्च शिक्षा M.Phil., P.hd., आदि की व्यवस्था जैन दर्शन में करने का विधान भी रखा गया है।

इस तरह की समणी-शिक्षा की समस्त व्यवस्था समणी वर्ग के मुख्य कार्यालय गुरु जयमल लाल - ज्ञान मरलेचा स्वाध्याय भवन , जय वाटिका , मरलेचा गार्डन में रहेगी।

समणवर्ग के लिए इस तरह की व्यवस्था आवश्यक होने पर बैंगलोर में रहेगी। आने वाले समय में इसी को विस्तार देकर शीघ्रतातिशीघ्र एक अहिंसा जैन विश्वविद्यालय की स्थापना का लक्ष्य भी रखा गया है। अनेक भाषाओं के अध्ययन के लिए व्यवस्था का भी प्रयत्न किया जायेगा।

Scanned by CamScanner

● ध्यान-साधना : प्रवचन-प्रभावक, स्वाध्याय व 12 व्रतों के प्रबल प्रेरक अणुप्पेहाध्यान के प्रणेता डॉ. श्री पदमचंद्रजी म.सा. ने विशुद्ध आगमोक्त पद्धति के आधार पर अणुप्पेहा ध्यान पद्धति ग्रीष्म काल में आयोजित किये जाने वाले राष्ट्रीय आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविरों के शिविरार्थियों के लिए प्रारंभ की थी। ध्यान एकाग्रता व साधना की सिद्धि में इसकी उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए सभी समण/समणी वृंद के लिए दीक्षा पश्चात् इस अणुप्पेहा ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण अनिवार्य रखा गया है।

प्रशिक्षण लेकर कुशलता प्राप्त करने पर समण/समणियों का कर्त्तव्य होगा कि वे अणुप्पेहा ध्यान पद्धति का जिनशासन के प्रचार-प्रसार व आत्मकल्याण-दोनों के हित में अधिक से अधिक व्यक्तियों (बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों व अन्य नरनारियों को शिक्षित-प्रशिक्षित करें व उसका प्रायोगिक-प्रशिक्षण दें।

डॉ. श्री पदमचंद्रजी म.सा. द्वारा प्रारंभ इस अणुप्पेहा ध्यान पद्धति के प्रशिक्षण को छः चरणों में विभक्त किया गया है। इन छः ही चरणों की साधना कर लेने पर साधक साधना से समाधि तर्क पहुँच जाता है।

* अणुप्पेहा ध्यान पद्धति के 6 चरण *

● 1. प्रथम चरण : इस प्रारंभिक चरण का उद्देश्य कार्यारंभ को सिद्ध व पूजित-पूजनीय पुरुषों को नमन के साथ गति देना है। नमन व वंदन विनय-सूचक है। विनय से कार्य सिद्धि में तत्परता आती है और त्वरित सफलता प्राप्त होती है। इसमें विभिन्न मुद्राओं के साथ श्वासोच्छ्वास द्वारा उद्घोष पूर्वक पंच परमेष्ठी को नमन कर भाव वन्दन किया जाता है।

● 2. द्वितीय चरण : इसमें ध्यान-साधक अपनी मूल-शक्ति को ऊर्ध्वगति प्रदान करने के लिए पांच प्रकार की मुद्राओं का अभ्यास करता है। इन मुद्राओं के अभ्यास से मूल शक्ति के ऊर्ध्वगमन के साथ पंचेन्द्रियाँ भी निगृहीत बनती हैं।

Scanned by CamScanner

● 3. तृतीय चरण : इसमें ध्यानसाधक महामंत्र नमस्कार सूत्र के पैंतीस (35) अक्षरों का आरोह-अवरोह व श्वासोच्छ्वास के साथ उद्घोष करता है। इस चरण से ध्यान-साधक को दो लाभ प्राप्त होते हैं

* प्रथम चरण से साधक की समस्त शारीरिक नसों-नाड़ियों का शोधन होता हैं और

* द्वितीय व तृतीय चरण से इससे पवन वेग से भी अधिक व्यक्ति के चंचल मन की अस्थिरता समाप्त होकर चंचलता का स्वत: निरोध हो जाता है।

ये तीन चरण अणुप्पेहा ध्यान पद्धति के बाह्य चरण कहलाते हैं। शेष और अंतिम तीन चरण आभ्यंतरिक माने जाते हैं। इनमें से -

● 4. चतुर्थ चरण : इस चरण में साधक अपने सामने अणुप्पेहा संकल्प चक्र को स्थित कर इस पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करता हुआ ध्यान में प्रवेश करने के संकल्प से, ध्यानस्थ बनने के लिए प्रयत्नशील बनता है। यह चेष्टा साधक को ध्यान लीन बना कर सहज ही एकाग्रता में ले जाती है।

इस चरण में साधक अनुभव करता है कि उसके मानसिक संकल्प सहज में ही मिट रहे हैं। इस अनुभव के साथ ही साधक के अंतर में स्थित राग-द्वेष की ग्रंथि का भेदन प्रारंभ हो जाता है।

● 5. पंचम चरण : ध्यानलीन एकाग्र बना साधक इस चरण में स्वत: ही धर्मध्यान की अवस्था में पहुंच कर आत्मानंद की सी अनुभूति पाने लगता है। वह बारह प्रकार की भावनाओं के द्वारा आत्मसाक्षात् का पुन: पुन: प्रयास करता हुआ अनिर्वचनीय आत्म शांति का अनुभव करने लगता है।

● 6. षष्ठम चरण : इसमें साधक आत्मसाक्षात करता हुआ सहज समाधिवत् बन जाता है और तप (निर्जरा) के बारह भेदों में से आभ्यंतर भेद 'ध्यान' से 'व्युत्सर्ग ' अर्थात् भेद विज्ञान स्थिति में प्रवेश कर जाता है।

पंचम चरण के पश्चात् अणुप्पेहा ध्यान लीन साधक भेद विज्ञान की प्राप्ति कर शरीर और आत्मा केअलग-अलग मानता हुआ केवल आत्मलीन बनने में प्रयत्नशील बनता है। इस स्थिति में शरीर इसके लिए महत्त्व हीन बन जाता है। वह सुख-दु:ख, भूख-प्यास, आधि-व्याधि जैसी चिंताओं का सर्वथा त्याग कर देता है। आत्मा ही उसके लिए साध्य, आत्मरमण

Scanned by CamScanner

ही उसका एकमात्र कार्य रह जाता है। वह सहज में दस प्रकार के यति धर्म (खंति, मुत्ति आदि) चिंतन में उतरकर भाव संयम द्वारा सप्तम् अप्रमत्त संयति गुणस्थान में पहुंचने का सामर्थ्य प्रकट कर लेता है।

छः चरणों की इस अणुप्पेहा ध्यान पद्धति की साधना करता हुआ साधक ओजस्वी, सुदृढ़ मनोबल का धारक और तपः तेज से पूरित हो सकता है। वह अपनी पाप प्रकृतियों का इस ध्यान-साधना से पुण्य प्रकृतियों में संक्रमण कर पुण्यानुबंधी पुण्य में अभिवृद्धि कर लेता है तथा पापकर्मों को नष्ट करता हुआ सहज साधनाशील बन जाता है।

● क्रिया-साधना : 1. संयम-पालन 2. तप 3. पद-यात्रा

समण-समणी के लिए जिन-जिन साधना-बिन्दुओं में जो-जो आगार या छूट है, उसे दृष्टिगत रखकर सभी समण व समणियाँ स्व-विवेक पूर्वक पंच महाव्रत एवं पाँच समिति तीन गुप्ति का पूर्ण पालन करेंगे। समण-समणी के लिए निर्धारित समाचारी का दोष रहित पालन करेंगे। जिन शासन के व्यापक प्रचार-प्रसार के निमित्त रखी गई छूट में जो सूक्ष्म या जो स्थूल हिंसा होती है, उसके अतिरिक्त छः काय जीवों को अभय देंगे व उनके प्रति-पालक बनेंगे।

तप के बारह भेदों में छः बाह्य व छः आभ्यंतरिक तप में से सामर्थ्य के अनुसार अनशन, उणोदरी, रस-परित्याग आदि तथा प्रायश्चित, विनय, वैय्यावच्च आदि तप का समय-समय पर आराधन करेंगे।

प्रतिदिन कम से कम द्रव्य-मर्यादा रखते हुए एक्या दो विगय का त्याग रखेंगे।

पर्व तिथियों के दिन उपवास, एकासणा, आयम्बिल आदि तप अवश्य करें क्योंकि यह पूर्व में बंधे कर्मों की निर्जरा के हेतु हैं।

● प्रतिदिन नवकारसी करेंगे। ● पीने के लिए गर्म पानी धोवन काम लेंगे।
● सचित-अचित का विवेक रखते हुए भिक्षाचरी करेंगे।

● प्रतिक्रमण ●

समण/समणी वर्ग के लिए उभयकाल श्रमण-आवश्यक सूत्र सविधि करने का विधान रखा गया है।

Scanned by CamScanner

* समण/समणी यात्रा *

'रमता योगी, बहता पानी' – निर्मल होते हैं। जिनशासन के प्रचार-प्रसार में यात्राओं का महत्त्व तो और अधिक है। साधु-साध्वी केवल पद-यात्रा करने में स्वतंत्र है अत: उनका धर्म-संदेश सीमित क्षेत्रों में रह जाता है। व्यापक प्रचार-प्रसार के उद्देश्य की पूर्ति के लिए समण-समणी वाहन प्रयोग कर लम्बी दूरी की यात्रा तय कर सकेंगे पर पद-विहार योग्य क्षेत्रों में पद-विहार ही करेंगे।

चातुर्मास काल में समण-समणी प्रथम दो मास में चातुर्मास करेंगे। अर्थात् एक स्थान पर प्रार्थना, प्रवचन, शिविर आदि कार्यक्रम आयोजित करते हुए स्वयं स्वाध्यायादि अन्य साधनाएँ नियमानुसार करेंगे। शेष दो माह में समण-समणी एक माह दीक्षादाता गुरुदेव श्री के सानिध्य में ज्ञान-ध्यान सीखने में व्यतीत करेंगे व शेष एक माह अपने क्षेत्रीय या केन्द्रीय कार्यालय पर व्यतीत कर सकेंगे।

समण-समणी वर्ग वाहन/माईक आदि छूटों का उपयोग लेने के पश्चात् पूर्व नियोजित आलोचना प्रतिक्रमण प्रायश्चित करेंगे।

वाहन-यात्रा के कारण समण/समणी जिन शासन प्रचार-प्रसार में अधिक समय दे सकेंगे। क्षेत्रीय नियोजक /नियोजिका इनकी यात्रा संबंधी सम्पूर्ण व्यवस्था करेंगे।

जिन क्षेत्रों में स्थानकवासी संत-सती नहीं पहुंच पाते या वर्षों के विलम्ब से जिन क्षेत्रों को संभाल पाते हैं। विशेषकर ऐसे सभी क्षेत्रों में समण-समणी पहुंच कर वहाँ धर्मध्यान की ज्योति से अपनी आध्यात्मिक सेवाओं द्वारा आलोकित करेंगे। घर – घर, जन – जन में, विशेषकर बालक – बालिकाओं व युवा – युवतियों में धर्म के प्रति जागरणा उत्पन्न करेंगे।

अनेक जिनानुयायी विदेशों में व्यवसाय सेवा, नौकरी आदि करते हैं। उनको जिनशासन व जैन धर्म व सिद्धांतों के प्रति रुचि होते हुए भी धर्म व धर्मात्माओं की संगति नहीं मिलती। योग्य समण/समणी विदेशों में जाकर उन जिनानुयायियों की जिनधर्म व जैन सिद्धांतों की रुचि को जागृत करेंगे।

Scanned by CamScanner

वे प्रभु महावीर के सिद्धांतों व जैन दर्शन के विभिन्न आयामों से इन्हें अवगत कराकर जैन धर्म आत्मसाधना में उन्हें जागृत बनाने का प्रयत्न करेंगे। समण/समणी वर्ग इस तरह वहाँ ज्ञान-ध्यान व धर्म की ज्योति जगाकर वहां रहने वालों की श्रद्धा को स्थिर करेंगे।

रुचि रखने वाले जागृत भाई-बहनों को यहाँ से गए समण/समणी ऐसी प्रेरणा देंगे कि जिससे वे भी स्वाध्यायी या समण/समणी बन जिनशासन के प्रचार-प्रसार में इन क्षेत्रों में क्रियाशील (सक्रिय) बन सकें। वे अन्यान्य जन को माँसाहार आदि का त्याग करा कर कर्म से पूर्ण अहिंसक बनाने का प्रयास भी करते रहेंगे।

वीतराग धर्म की पावन गंगा घर - घर में बहाकर शासन पति के अनंत - अनंत उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर अपने चित में समाधि भाव को जागृत करने का पुरुषार्थ करेंगे।

जय जिनेन्द्र - जय गुरु जयमल

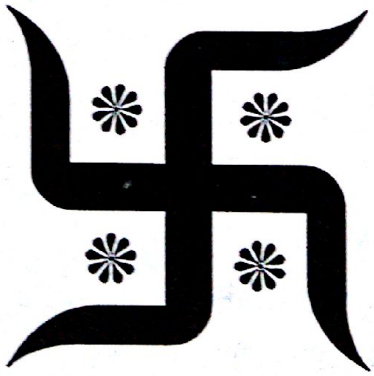

Scanned by CamScanner

जयसंघीय संस्थाएँ

अध्यक्ष	मंत्री
श्री अ.भा.श्वे.स्था. जयमल जैन श्रावक संघ	
श्री धनराजजी बाफणा	श्री जे. धरमचन्दजी लूंकड
श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय मुमुक्षु सेवा ट्रस्ट, चेन्नई	
श्री चैनराजजी गोटावत	श्री शान्तिलालजी मेहता
श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय गुरु सेवा समिति, ब्यावर	
श्री अनोपचंदजी डूंगरवाल	श्री शान्तिलालजी नाबरिया
श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय राष्ट्रीय शिविर ट्रस्ट, बैंगलोर	
श्री धनराजजी बाफणा	श्री चाँदमलजी बिलवाड़िया
श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय चेन्नई शिविर ट्रस्ट	
श्री देवराजजी बोहरा	श्री नरेन्द्रकुमारजी मरलेचा
श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय इरोड़ शिविर ट्रस्ट	
श्री राजेन्द्रकुमारजी भूरट	श्री महेन्द्रजी सुराणा
श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय माऊंट आबू शिविर ट्रस्ट	
श्रीमती स्नेहा सुराणा (अमेरिका)	श्री संजय लुणावत
श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय ऊटी शिविर ट्रस्ट	
श्री धरमचंदजी लूंकड़	श्री उत्तमचंदजी बोकड़िया
श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय खजवाना शिविर ट्रस्ट	
श्री अमरचंदजी चोरड़िया	श्री महावीरजी चौरड्या(जे.के)
श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई	
श्री ज्ञानचंदजी मुणोत	श्री नवरत्नमलजी गादिया
श्री अ. भा. जयमल जैन स्वाध्याय समिति ट्रस्ट, चेन्नई.	
श्री ज्ञानचंदजी मुणोत	श्री पारसमलजी बोहरा
श्री जयमल जैन गौशाला, इलकल	
श्री सुभाषजी कटारिया	श्री दिलीपकुमारजी बोहरा

Scanned by CamScanner

जयसंघीय संस्थाएँ

अध्यक्ष	मंत्री

श्री जयध्वज प्रकाशन समिति, चेन्नई

श्री शांतिलालजी मेहता — श्री कान्तिलालजी छल्लाणी

श्री अ. भा. जयमल जैन जीव दया ट्रस्ट, ब्यावर

श्री शान्तिलालजी नाबरिया — श्री दुलराज मकाणा

श्री चाँद गुरु जीव दया ट्रस्ट, पिपलियाकलाँ (राज.)

श्री सोहनकुमारजी आँचलिया — श्री जवरीलालजी बोहरा

श्री अ. भा. जयमल जैन अध्यात्मिक परिक्षा बोर्ड, ब्यावर

श्री जबरचंदजी बोकड़िया — श्री अशोकजी बोहरा

श्री जयमल जैन हरकगुरु, पार्श्व पद्मोदय जीव दया ट्रस्ट, बोलारम

श्री प्रदीप सुराणा — श्री अशोकजी बोहरा

श्री जयमल शुभ गुरु पार्श्व-पद्मोदय जैन गौशाला, पाँडिचेरी

श्री कुशलराजजी जैन — श्री गौतमचंदजी नाहर

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय राष्ट्रीय जय जाप समिति

श्री शान्तिलाल चौपड़ा — श्री पारसमलजी डागा

श्री जयमल जैन चाँद गुरु पार्श्व-पद्मोदय जीव दया ट्रस्ट, बैंगलोर

श्री धनराजजी बाफणा — श्री प्रकाशचन्दजी बिलवाड़िया

श्री जयमल जैन चौथ गुरु पार्श्व-पद्मोदय गौशाला, अंजूर विलेज

श्री सुरेशजी गेलड़ा — श्री आनंदजी जैन

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय आंध्र प्रदेश शिविर ट्रस्ट

श्री भागचंदजी सुराणा — श्री महावीरचंदजी लोढ़ा

श्री चन्द्र-जैन हॉस्पीटल, ब्यावर

श्री देवराजजी बोहरा — श्री दुलराजजी मकाणा

श्री स्थानकवासी जयमल जैन मेमोरियल ट्रस्ट, नागौर

श्री गौतमचन्दजी सुराणा — श्री प्रकाशचन्दजी बोहरा

श्री जय गुरुलाल जैन सेवा संस्थान, झुंठा

श्री अनराजजी बोहरा — श्री शान्तिलालजी मेहता

Scanned by CamScanner

जयसंघीय संस्थाएँ

अध्यक्ष	मंत्री
श्री जयमल जैन राष्ट्रीय युवक परिषद्	
श्री अरुणजी गोटावत	श्री महावीरचंद चौरड़िया
श्री जयमल जैन राष्ट्रीय युवक परिषद्, आंध्र प्रदेश	
श्री राजेन्द्रजी लोढ़ा	श्री प्रकाशजी कटारिया
श्री जयमल जैन राष्ट्रीय युवक परिषद्, कर्नाटका	
श्री कनकमलजी चौरड़िया	श्री ज्ञानचंदजी मकाणा
श्री जयमल जैन राष्ट्रीय युवक परिषद्, तमिलनाडु	
श्री के.एल. जैन	महिपाल चोरड़िया

* दक्षिण प्रांतीय शाखाएँ *

श्री अ.भा.श्वे.स्था. जयमल जैन श्रावक संघ, कर्नाटका	
श्री धनराजजी बाफणा	श्री महावीरचंदजी चौरड़िया(जे.के)
श्री अ.भा.श्वे.स्था. जयमल जैन श्रावक संघ, तमिलनाडु	
श्री धरमीचंदजी बोहरा	श्री नरेन्द्रजी मरलेचा
श्री अ.भा.श्वे.स्था. जयमल जैन श्रावक संघ, आंध्र प्रदेश	
श्री जिनेन्द्रजी राँका	श्री अशोकजी बोहरा

* तत्संबंधित संस्थाएँ *

श्री जयमल जैन डी.आर. बोहरा चेरीटेबल ट्रस्ट, सिन्धनूर	
श्री सोहनलालजी बोहरा	श्री चम्पालालजी बोहरा
श्री जयमल जैन जीवरक्षा एवं पर्यावरण सुरक्षा फाउण्डेशन	
श्री सुगालचन्द सिंघवी	श्री प्रसन्नचन्द सिंघवी
श्री जयमल जैन मेमोरियल ट्रस्ट, चेन्नई	
श्री रमेशचन्दजी गुगलिया	श्री अशोककुमारजी गुगलिया
श्री जयमल जैन लांबिया चेरीटेबल ट्रस्ट	
श्री फूलचन्दजी नाहर	श्री अमरचन्दजी कोठारी
श्री जयमल G. चम्पालाल फतेचन्द्र रांका ट्रस्ट, अम्बत्तुर	
श्री नेमीचंदजी रांका	श्री सुरेशजी रांका

Scanned by CamScanner

* चमत्कारी जय जाप *

पूज्य जयमलजी हुआ अवतारी, ज्यारां नाम तणी महिमा भारी ।
कष्ट टले मिटे ताव तपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ॥

पूज्य नामे सब कष्ट टले, वली भूत-प्रेत पिण नाय छले ।
मिले न चोर हुवे गुप-चुपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ।

लक्ष्मी दिन-दिन बढ़ जावे, वली दुःख नेड़ो तो नहीं आवे ।
व्यापार में होवे बहुत नफो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ॥

अडियो काम तो होय जावे, वली बिगड़यो काम भी बण जावे ।
भूल-चूक नहीं खाय डफो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ॥

राज काज में तेज रहे, वली खम्मा-खम्मा सब लोक कहे ।
आछी जागा जाय रुपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ॥

पूज्य नाम तणो जो लियो ओटो, ज्यारे कदे नहीं आवे टोटो ।
घर-घर बारणे काय तपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ॥

एक माला नित नेम रखो, किणी बात तणों नहीं होय धखो ।
खाली विमाण अरु टलेजी सपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ॥

स्वभक्त तणी प्रतिपाल करे, मुनिराम सदा तुम ध्यान धरे ।
कोई प्रत्यक्ष बात मति उथपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ॥

पूज्य नाम प्रताप इसो जबरो, दुःख कष्ट-रोग जावे सगरो ।
केई भवां रा कर्म खपो, पूज्य जयमलजी रो जाप जपो ॥

नोट : इस चमत्कारी जय जाप का नित्य उत्कृष्ट आध्यात्मिक भावों से तीन बार जाप करने से साधक सम्यक्त्व में सुदृढ़ बनता है, निकट भव में मोक्षगामी बनता है ।

Scanned by CamScanner

जय वाटिका मरलेचा गार्डन (चेन्नई) के यशस्वी चातुर्मास की स्वर्णिम उपलब्धियाँ

* प्रत्येक रविवारिय संस्कार शिविर में लगभग 900 शिविरार्थियों द्वारा आध्यात्मिक, नैतिक शिक्षा प्राप्त करना।
* प्रात: प्रार्थना में लगभग 700 के आस-पास श्रावक-श्राविका बालक-बालिका की उपस्थिति रहती है।
* 500 से अधिक बालक-बालिका प्रतिक्रमण कंठस्थ कर रहे हैं।
* 150 से अधिक शिविरार्थियों ने दशवैकालिक के चार अध्ययन कंठस्थ किये व अनेक थोकड़े सीखे।
* उपाध्याय प्रवर श्री पार्श्वचन्द्रजी म.सा. के मुखारविंद से इतने सहज तपश्चर्या के प्रत्याख्यान होते हैं कि तपश्चर्या का नया कीर्तिमान स्थापित हो गया है। हमारे संघ में 47 मासक्षमण, 700 अट्ठाईयां सम्पन्न हुई।
* चेन्नई के घर-घर में एक भवावतारी आचार्य सम्राट पूज्य श्री जयमलजी म.सा. के नाम की गूंज।
* प्रत्येक गुरुवार को महिला समिति के तत्वाधान में तत्वज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन।
* अनेक श्रावक-श्राविका अणुप्पेहा ध्यान शिविर से लाभान्वित।
* 'क्षमा धर्म पर प्रवचन प्रभावक डॉ. श्री पदमचन्द्रजी म.सा. के बिना माइक के ओजस्वी प्रवचनों का चुम्बकीय आकर्षण। 5-7 हजार की जनमेदिनी लाभान्वित।
* त्रिशताब्दी जन्मोत्सव के उपलक्ष में स्पेशल पोस्टल कवर अनावरण।
* जयध्वज भाग - 3 का विमोचन

Scanned by CamScanner

एकभवावतारी
आचार्य जय-जीवन प्रकाश

- जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, नागौर, जैसलमेर आदि के राजा-महाराजाओं एवं दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह तथा उनके शाहजादा को प्रतिबोध देकर सुमार्गी बनाया।

- वि.सं. १८०७ में बड़ी साधु वंदना की रचना की। इसके अतिरिक्त २५० से अधिक काव्य कृतियों का निर्माण किया।

- अपने जीवनकाल में २ वर्ष पूर्व (वि.सं. १८५१ से १८५३) आचार्य पद उत्तराधिकारी को देकर आत्म समाधि में लीन बने।

- संथारे के सोलहवें दिन मध्य रात्रि में उदय (मुनि) केशव (मुनि) ने देवपर्याय में से आकर वंदन किया, पूर्ण प्रकाश को देखकर आचार्य श्री रायचंदजी म.सा. आदि संतों के पूछने पर सीमंधरस्वामी से समाधान पाया कि पूज्यश्री एकभवावतारी हैं। प्रथम कल्प देवलोक से च्यव कर महाविदेह क्षेत्र में जाकर मोक्ष में जायेंगे।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner